रिसाला नम्बर : 63

Kafan Choron Ke Inkishafat (Hindi)

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

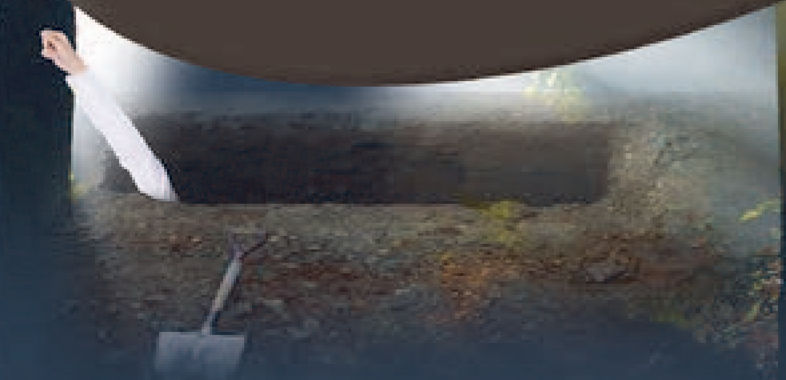

- एक कफ़न चोर की आपबीती 01
- शराबी का अन्जाम 04
- जवानी में तौबा का इन्आम 05
- अज़ाबे क़ब्र का क़ुरआन से सुबूत 07
- हम क्यूं परेशान हैं ? 10
- बे नमाज़ी की सोहबत से बचो ! 13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (اَلْمُستطرَف ج۱ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

येह रिसाला (**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मकतबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मकतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला (19 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों और नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत बढ़ेगी ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सरदार, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जब जुमे'रात का दिन आता है **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमे'रात** और **शबे जुमुआ** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।" (اَلْفِرْدَوْس ج۱ ص۱۸٤ حديث٦٨٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ एक कफ़न चोर की आपबीती (हिकायत)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दस्ते मुबारक पर एक ऐसे **कफ़न चोर** ने तौबा की जिस ने सेंकड़ों कफ़न चुराए थे । हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उस ने तीन क़ब्रों के **पुर असरार वाक़िआत** बयान किये । चुनान्चे उस ने कहा :

आग की ज़न्जीरें

एक बार मैं ने एक क़ब्र खोदी तो उस में एक दिल हिला देने

वाला मन्ज़र था ! क्या देखता हूं कि **मुर्दे का चेहरा सियाह है, हाथ पाउं में आग की ज़न्जीरें हैं और उस के मुंह से ख़ून और पीप जारी है।** नीज़ उस से इस क़दर बदबू आ रही थी कि दिमाग़ फटा जा रहा था। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर मैं डर कर भागने ही वाला था कि **मुर्दा बोल पड़ा :** क्यूं भागता है ? आ, और सुन कि मुझे किस गुनाह की सज़ा मिल रही है ! मैं मुर्दे की पुकार सुन कर ठिठक कर खड़ा हो गया और तमाम हिम्मत इकठ्ठी कर के क़ब्र के क़रीब गया और जब अन्दर झांक कर देखा तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस की गरदन में **आग की ज़न्जीरें** बांधे बैठे थे। मैं ने मुर्दे से पूछा : तू कौन है ? उस ने जवाब दिया : "मैं मुसल्मान इब्ने मुसल्मान हूं मगर अफ़्सोस ! मैं **शराबी** और **ज़ानी** था और इसी बद मस्ती की ह़ालत में मरा और अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो गया।" अपना बयान जारी रखते हुए उस कफ़न चोर ने मज़ीद बताया :

काला मुर्दा

एक और मौक़अ़ पर जब कफ़न चुराने की ग़रज़ से मैं ने क़ब्र खोदी तो **एक काला मुर्दा ज़बान निकाले खड़ा हो गया ! उस के चारों त़रफ़ आग लपक रही थी, फ़िरिश्ते उस के गले में ज़न्जीरें बांधे खड़े थे।** उस शख़्स ने मुझे देखते ही पुकारा : "भाई ! मैं सख़्त प्यासा हूं मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो।" फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : ख़बरदार ! इस **बे नमाज़ी** को पानी मत देना। फिर मैं ने हिम्मत कर के उस मुर्दे से पूछा : तू कौन था और तेरा जुर्म क्या है ? उस ने जवाब दिया : "मैं मुसल्मान था मगर अफ़्सोस ! मैं ने **अल्लाह** करीम की बहुत

ना फ़रमानियां की हैं और मेरी त़रह़ बहुत से गुनाहगार अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं ।" उस ने मज़ीद कहा :

क़ब्र में बाग़

इसी त़रह़ एक दफ़्अ़ा मैं ने एक क़ब्र खोदी तो **वोह अन्दर से बहुत वसीअ़ थी और एक निहायत ख़ुशनुमा बाग़ देखा जिस में नहरें बह रही थीं, एक ह़सीनो जमील नौ जवान उस बाग़ में मज़े लूट रहा था ।** मैं ने उस से पूछा : तुझे किस अ़मल के सबब येह इन्आ़म मिला है ? वोह बोला : मैं ने एक वाइ़ज़ (या'नी वा'ज़ करने वाले) से सुना था कि जो शख़्स **आ़शूरे के रोज़ छ[6] रक्अ़त नफ़्ल** पढ़े **अल्लाह** पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है । लिहाज़ा मैं हर साल आ़शूरे के दिन 6 रक्अ़तें पढ़ा करता था । (راحتُ القُلوب ص٦٠ مُلَخَّصاً)

﴾2﴿ पांच क़ब्रें (ह़िकायत)

ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक बार एक शख़्स घबराया हुवा ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : **आ़लीजाह !** मैं बेह़द गुनाहगार हूं और जानना चाहता हूं कि मेरे लिये मुआ़फ़ी भी है या नहीं ? **ख़लीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीनो आस्मान से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है । **ख़लीफ़ा** ने कहा : क्या तेरा गुनाह लौह़ो क़लम से भी बड़ा है ? उस ने कहा : बड़ा है : पूछा : क्या तेरा गुनाह अ़र्शो कुर्सी से भी बड़ा है ? जवाब दिया : बड़ा है । **ख़लीफ़ा** ने कहा : भाई यक़ीनन तेरा गुनाह **अल्लाह** पाक की रह़मत से तो बड़ा नहीं हो सकता । येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए़ उमंड आया और उस ने रोना शुरूअ़ कर दिया ! **ख़लीफ़ा** ने कहा : भई आख़िर मुझे पता भी तो चले कि तुम्हारा

गुनाह क्या है ? इस पर उस ने कहा : **हुज़ूर !** मुझे आप को बताते हुए बेहद नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी तौबा की कोई सूरत निकल आए। येह कह कर उस ने अपनी **दास्ताने दहशत निशान** सुनानी शुरूअ़ की। कहने लगा : आ़लीजाह ! मैं एक **कफ़न चोर** हूं, आज रात मैं ने **पांच क़ब्रों** से इ़ब्रत ह़ासिल की और तौबा पर आमादा हुवा।

शराबी का अन्जाम

कफ़न चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब **पहली क़ब्र** खोदी तो मुर्दे का मुंह क़िब्ले से फिरा हुवा था। मैं ख़ौफ़ज़दा हो कर जूं ही पलटा कि एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। कोई कह रहा था : "इस मुर्दे से अ़ज़ाब का सबब तो दरयाफ़्त कर ले।" मैं ने घबरा कर कहा : मुझ में हिम्मत नहीं, तुम ही बताओ ! आवाज़ आई : येह शख़्स **शराबी** और **ज़ानी** था।

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा

दूसरी क़ब्र खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था ! क्या देखता हूं कि **मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका है और त़ौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है**। ग़ैब से आवाज़ आई : येह **झूटी क़समें** खाता और **ह़राम** खाता था।

आग की कीलें

तीसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी एक भयानक मन्ज़र था। **मुर्दा गुद्दी की त़रफ़ ज़बान निकाले हुए था और उस के जिस्म में आग की कीलें ठुकी हुई थीं**। ग़ैबी आवाज़ ने बताया : येह **ग़ीबत** करता, **चुग़ली** खाता और लोगों को आपस में **लड़वाता** था।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

आग की लपेट में

चौथी क़ब्र खोदी तो मेरी निगाहों के सामने एक बेह़द सन्सनी ख़ैज़ मन्ज़र था ! **मुर्दा आग में उलट पलट हो रहा था और फ़िरिश्ते उस को आग के गुर्ज़ों** (या'नी आतशीं हथोड़ों) **से मार रहे थे।** मुझ पर एक दम दहशत त़ारी हो गई और मैं भाग खड़ा हुवा। मगर मेरे कानों में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज रही थी कि येह बद नसीब **नमाज़** और **रोज़ए रमज़ान** में सुस्ती किया करता था।

जवानी में तौबा का इन्आ़म

पांचवीं क़ब्र जब खोदी तो उस की ह़ालत गुज़श्ता चारों क़ब्रों से बिल्कुल बर अ़क्स (या'नी उलट) थी। **क़ब्र ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ थी, अन्दर एक तख़्त पर ख़ूब सूरत नौ जवान बैठा हुवा था।** ग़ैबी आवाज़ ने बताया **:** इस ने जवानी में तौबा कर ली थी और **नमाज़ व रोज़े** का सख़्ती से पाबन्द था। (تذکرۃ الواعظین ص ٦١٢ ملخّصاً)

﴾3, 4﴿ खोपड़ी में सीसा भरा हुवा था (ह़िकायत)

﴾3﴿ **ह़ज़रते** अ़ब्दुल मुअमिन बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक **कफ़न चोर** जिस ने तौबा कर ली थी, उस से मैं ने दरयाफ़्त किया कि कफ़न चोरी के दौर में अगर तुम ने कोई **सन्सनी ख़ैज़** चीज़ देखी हो तो बताओ। इस पर उस ने कहा कि मैं ने एक बार एक शख़्स की क़ब्र खोदी तो उस के तमाम जिस्म में **कीलें** ठुकी हुई थीं और एक बड़ी **कील** उस के सर में जब कि दूसरी दोनों टांगों के बीच में पैवस्त थी। ﴾4﴿ एक और **कफ़न चोर** से दरयाफ़्त किया गया तो उस ने बताया कि **मैं ने एक खोपड़ी देखी जिस में सीसा पिघला कर भरा गया था।** (شرح الصدور ص ١٧٣)

﴾5﴿ पुर असरार अन्धा (ह़िकायत)

एक अन्धा भिकारी था जो अपनी आंखें छुपाए रखता था, उस का सुवाल करने का अन्दाज़ बड़ा अ़जीब था, वोह लोगों से कहता : "जो मुझे कुछ देगा उस को एक अ़जीब बात सुनाऊंगा और जो ज़ाइद देगा उस को एक अ़जीब चीज़ दिखाऊंगा भी।" **अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : किसी ने उस को कुछ दिया तो मैं उस के पास खड़ा हो गया। **उस ने अपनी आंखें दिखाई, मैं येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस की आंखों की जगह दो सूराख़ थे जिन से आर पार नज़र आता था।** अब उस ने अपनी **दास्ताने ह़ैरत निशान** सुनानी शुरूअ़ की, कहने लगा : मैं अपने शह्‌र का नामी गिरामी **कफ़न चोर** था और लोग मुझ से बेह़द ख़ौफ़ज़दा रहते थे, इत्तिफ़ाक़ से शह्‌र का **क़ाज़ी** (या'नी जज) बीमार पड़ गया, उस को जब अपने बचने की उम्मीद न रही तो उस ने मुझे (बत़ौरे रिश्वत) **सो दीनार** भिजवा कर कहला भेजा कि मैं इन सो दीनारों के ज़रीए़ अपना **कफ़न** तुझ से मह़फ़ूज़ करना चाहता हूं। मैं ने हामी भर ली। इत्तिफ़ाक़न वोह तन्दुरुस्त हो गया मगर कुछ अ़र्से के बा'द फिर बीमार हो कर मर गया। मैं ने सोचा कि (रिश्वत की) वोह रक़म तो पहले मरज़ की थी। लिहाज़ा मैं ने उस की क़ब्र खोद डाली। क़ब्र में अ़ज़ाब के आसार थे और **क़ाज़ी** (जज) **क़ब्र में बैठा हुवा था और उस के बाल बिखरे हुए थे और आंखें सुर्ख़ हो रही थीं। इतने में मैं ने अपने घुटनों में दर्द मह़सूस किया और एक दम किसी ने मेरी आंखों में उंग्लियां घोंप कर मुझे अन्धा कर दिया और कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! अल्लाह पाक के भेदों पर क्यूं मुत्त़लअ़ होता है ?** (شرح الصدور ص ۱۸۰)

क़ब्र में दफ़्न न हों तब भी जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है । अ़ज़ाबे क़ब्र दर अस्ल अ़ज़ाबे बरज़ख़ ही को कहते हैं । इसे **अ़ज़ाबे क़ब्र** इस लिये कहते हैं कि उ़मूमन लोग क़ब्र ही में दफ़्न होते हैं वरना ख़्वाह कोई शख़्स जल जाए, डूब जाए, उस को मछलियां खा जाएं, जंगल में दरिन्दे फाड़ खाएं, कीड़े मकोड़े खा जाएं, या हवा में उस की राख उड़ा दी जाए हर सूरत में उस के साथ जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होगा ।

बरज़ख़ के मा'ना

बरज़ख़ के लफ़्ज़ी मा'ना आड़ और पर्दा के हैं और मरने के बा'द से ले कर क़ियामत में उठने तक का वक़्फ़ा ''बरज़ख़'' कहलाता है । चुनान्चे बरज़ख़ के मुतअ़ल्लिक़ पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** आयत 100 में **अल्लाह** करीम फ़रमाता है :

وَمِنْ وَّرَآىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के आगे एक आड़ है उस दिन तक जिस दिन उठाए जाएंगे ।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि : **مَا بَيْنَ الْمَوْتِ اِلَى الْبَعْثِ** या'नी **बरज़ख़** से मुराद मौत से ले कर क़ियामत के दिन दोबारा उठाए जाने की मुद्दत है ।

(تفسیر طبری ج۹ ص ۲۴۳)

अ़ज़ाबे क़ब्र का क़ुरआन से सुबूत

अ़ज़ाबे क़ब्र क़ुरआने पाक से साबित है । चुनान्चे पारह 29

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

सूरए नूह आयत 25 में ह़ज़रते सय्यिदुना नूह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ना फ़रमान क़ौम के तूफ़ान में ग़रक़ होने के बा'द अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला होने का इस त़रह़ बयान है :

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ (پ۲۹،نوح:۲۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी कैसी ख़त़ाओं पर डुबोए गए फिर आग में दाख़िल किये गए।

इस आयते मुबारका के इस ह़िस्से ''फिर आग में दाख़िल किये गए'' की तफ़्सीर में लिखा है : هِیَ نَارُ الْبَرْزَخِ وَالْمُرَادُ عَذَابِ الْقَبْر۔ या'नी उस आग से मुराद **बरज़ख़** की आग है और मुराद **अ़ज़ाबे क़ब्र** है।

(روح المعانی جزء ۲۹ ص ۱۲۵)

अ़ज़ाबे क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** आयत 46 में **अल्लाह** करीम फ़रमाता है :

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿۴۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।

इस आयत में वाज़ेह़ त़ौर पर **अ़ज़ाबे क़ब्र** का बयान है इस त़रह़ कि اَشَدَّ الْعَذَابِ (या'नी सख़्त तर अ़ज़ाब) से जहन्नम का अ़ज़ाब मुराद है जो क़ियामत के दिन होगा इस से पहले जो अ़ज़ाब है वोह अ़ज़ाब, **अ़ज़ाबे क़ब्र** है। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 862, نزهة القاری ج۲ ص۸۶۲)

अ़ज़ाबे क़ब्र का तज़्किरा करते हुए पारह 11 **सूरतुत्तौबह** आयत 101 में इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۰۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जल्द हम उन्हें दोबारा अ़ज़ाब करेंगे फिर बड़े अ़ज़ाब की त़रफ़ फेरे जाएंगे।

मुनाफ़िक़ीन की रुस्वाई

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا मज़्कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जुमुआ़ के दिन ख़ुत़्बा दिया और इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ फ़ुलां खड़े हो जा और निकल जा क्यूं कि तू मुनाफ़िक़ है।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **मुनाफ़िक़ों** का नाम ले ले कर उन को मस्जिद से निकाल दिया और उन को ख़ूब रुस्वा किया। फिर **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक शख़्स ने **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से कहा : आप को ख़ुश ख़बरी हो, **अल्लाह** पाक ने आज मुनाफ़िक़ीन को ज़लीलो रुस्वा कर दिया। **ह़ज़रते सय्यिदुना** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि मस्जिद से ज़लील हो कर निकाला जाना पहला अ़ज़ाब था और दूसरा अ़ज़ाब, **अ़ज़ाबे क़ब्र** है।

(مُلَخّص از: تفسیرِ طَبَری، ج ٦ ص ٤٥٧، عمدةُ القاری ج٦ ص ٢٧٤, नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 862)

अ़ज़ाबे क़ब्र का ह़दीस से सुबूत

अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत में बे शुमार अह़ादीसे मुबारका वारिद हैं। उन में से सिर्फ़ एक ह़दीसे पाक पेशे ख़िदमत है चुनान्चे दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ- या'नी क़ब्र का अ़ज़ाब ह़क़ है। (نَسائی ص۲۲۵ حدیث ۱۳۰۵)

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : **अ़ज़ाबे क़ब्र का इन्कार वोही करेगा जो गुमराह है।** (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 113)

हम क्यूं परेशान हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! हम मुसल्मान हैं और मुसल्मान का हर काम **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये होना चाहिये, मगर अफ़्सोस ! आज हमारी अक्सरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, शायद इसी वज्ह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है। कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार है तो कोई तंगदस्त व बे रोज़गार, कोई औलाद का त़लब गार है तो कोई ना फ़रमान औलाद की वज्ह से बेज़ार। अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है। **अल्लाह** करीम क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ؕ﴿۳۰﴾

(پ۲۵، الشوریٰ:۳۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह उस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की परेशानियों का ह़ल **अल्लाह** पाक और उस के **ह़बीब** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में है : **मन्क़ूल** है : مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَهٗ या'नी "जो शख़्स **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार बन जाता है तो **अल्लाह** पाक उस का कारसाज़ व मददगार बन जाता है।" (روح البیان ج۷ ص۶۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

नमाज़ की बरकतें

मुसल्मानों के लिये सब से पहला फ़र्ज़ **नमाज़** है मगर अफ़्सोस कि आज हमारी मस्जिदें वीरान हैं। यक़ीनन **नमाज़** दीन का सुतून है, **नमाज़ अल्लाह** करीम की ख़ुशनूदी का सबब है, **नमाज़** से रह़मत नाज़िल होती है, **नमाज़** से गुनाह मुआफ़ होते हैं, **नमाज़** बीमारियों से बचाती है, **नमाज़** दुआओं की क़बूलिय्यत का सबब है, **नमाज़** से रोज़ी में बरकत होती है, **नमाज़** अंधेरी क़ब्र का चराग़ है, **नमाज़** अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है **नमाज़** जन्नत की कुन्जी है, **नमाज़** पुल सिरात़ के लिये आसानी है, **नमाज़** जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाती है, **नमाज़** मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है, नमाज़ी को ताजदारे रिसालत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि इसे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक का दीदार होगा।

बे नमाज़ी का नाम दोज़ख़ के दरवाज़े पर

बे नमाज़ी से **अल्लाह** पाक नाराज़ होता है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है **:** जिस ने क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) नमाज़ छोड़ दी, जहन्नम के दरवाज़े पर उस का नाम लिख दिया जाता है।

(حِلْيَةُ الْاَولياء ج٧ص٢٩٩حديث١٠٥٩٠)

सर कुचलने की सज़ा

"**बुख़ारी शरीफ़**" में है **:** शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया **:** आज रात दो शख़्स (या'नी जिब्राईल व मीकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام) मेरे पास आए और

मुझे अर्ज़े मुक़द्दस (या'नी बैतुल मुक़द्दस[1]) में ले आए। मैं ने देखा कि **एक शख़्स लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स पथ्थर उठाए खड़ा है और पै दर पै पथ्थर से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है।** मैं ने उन फ़िरिश्तों से कहा : سُبْحٰنَ الله ! येह कौन हैं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये ! (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : पहला शख़्स जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा (या'नी जिस का सर कुचला जा रहा था) **येह वोह था जिस ने क़ुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाता था।** (بُخاری ج٤ص٤٢٥حديث٧٠٤٧ مُلَخَّصاً)

क़ब्र में आग के शो'ले (ह़िकायत)

एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई। जब वोह उसे दफ़्न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थेली क़ब्र में गिर गई है चुनान्चे वोह अपनी बहन की क़ब्र पर आया और उस को खोदा ताकि थेली निकाल ले। उस ने देखा कि **बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं !** उस ने जूं तूं क़ब्र पर मिट्टी डाली और ग़मगीन रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजान ! मेरी बहन के आ'माल कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अ़र्ज़ की : "मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क्ते देखे हैं।" येह सुन कर मां रोने लगी और कहा : अफ़्सोस ! तेरी बहन **नमाज़** में सुस्ती किया करती थी और **नमाज़** के अवक़ात गुज़ार कर पढ़ा करती थी (या'नी नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ती थी)। (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ص ١٨٩)

1 : नुज़्हतुल क़ारी, जि. 2, स. 874

होलनाक कूंवां

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब नमाज़ों को **क़ज़ा** कर के पढ़ने की सज़ा येह है तो सिरे से नमाज़ न पढ़ने वालों का किस क़दर ख़ौफ़नाक अन्जाम होगा ! **याद रखिये !** जो कोई जान बूझ कर नमाज़ को **क़ज़ा** कर के पढ़ेगा वोह "वैल" का मुस्तहिक़ (या'नी ह़क़दार) है। **वैल** जहन्नम में एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की सख़्ती से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है। नीज़ जहन्नम में एक "ग़य" नामी वादी है उस की गरमी और गहराई सब से ज़ियादा है उस में एक **होलनाक कूंवां** है जिस का नाम "हब हब" है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है **अल्लाह** पाक उस कूंएं को खोल देता है जिस से वोह ब दस्तूर भड़कने लगती है, **येह होलनाक कूंवां बे नमाज़ियों, ज़ानियों, शराबियों, सूदख़ोरों और मां बाप को ईज़ा देने वालों के लिये है।**

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 434 मुलख़्ख़सन)

जहन्नम में जाने का हुक्म

मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स को **अल्लाह** पाक की बारगाह में खड़ा किया जाएगा, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उसे जहन्नम में जाने का हुक्म फ़रमाएगा। वोह अ़र्ज़ करेगा **: या अल्लाह** पाक ! मुझे किस लिये जहन्नम में भेजा जा रहा है ? इर्शाद होगा **:** "नमाज़ों को उन का वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की झूटी क़समें खाने की वज्ह से।" (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ص۱۸۹)

बे नमाज़ी की सोह़बत से बचो !

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान**

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नमाज़ तर्क करने के अ़ज़ाब और बे नमाज़ी की सोह़बत में बैठने की मुमानअ़त करते हुए "फ़तावा रज़विय्या" (मुख़र्रजा) जिल्द 9 सफ़ह़ा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : **जिस ने क़स्दन** (या'नी जान बूझ कर) **एक वक़्त की** (नमाज़) **छोड़ी हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तह़िक़ हुवा,** जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की ज़िन्दगी में उसे (या'नी उस बे नमाज़ी को) यक लख़्त (या'नी बिल्कुल) छोड़ दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोह (बे नमाज़ी) इस (बायकाट) का सज़ावार (या'नी लाइक़) है। (बे नमाज़ी की सोह़बत से बचने की ताकीद मज़ीद करते हुए सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत ने कुरआनी आयत पेश की है चुनान्चे लिखते हैं कि) **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پ۷، الانعام:۶۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

"**तफ़्सीराते अह़मदिय्यह**" में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है : यहां ज़ालिमीन से मुराद काफ़िरीन, मुब्तदिईन या'नी गुमराह बद दीन और फ़ासिक़ीन हैं। (تفسیرات اَحمدیہ ص۳۸۸)

क़ज़ा उ़म्री का त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम कीजिये हरगिज़ कोताही न फ़रमाइये और مَعَاذَ اللّٰه जिन के ज़िम्मे **क़ज़ा नमाज़ें** हैं सच्ची तौबा कर के फ़ौरन अदा करने की तरकीब करें। इस ज़िम्न में "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा

125 ता 127 से **अ़र्ज़** व **इर्शाद** मुलाहज़ा फ़रमाइये : बा'ज़ हाज़िरीन ने **अ़र्ज़** किया कि हुज़ूर दुन्यवी मक्रूहात ने ऐसा घेरा है कि रोज़ इरादा करता हूं आज **क़ज़ा नमाज़ें** अदा करना शुरूअ़ कर दूंगा मगर नहीं होता ! क्या यूं अदा करूं कि पहले तमाम नमाज़ें फ़ज्र की अदा कर लूं फिर ज़ोहर की फिर और अवक़ात की, तो कोई ह़रज है ? मुझे येह भी याद नहीं कि कितनी नमाज़ें **क़ज़ा** हुई हैं ऐसी हालत में क्या करना चाहिये ? **इर्शाद :** क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना लाज़िम है, न मा'लूम किस वक़्त मौत आ जाए, क्या मुश्किल है कि **एक दिन की बीस रक्अ़तें** होती हैं (या'नी फ़ज्र की दो रक्अ़त फ़र्ज़ और ज़ोहर की चार फ़र्ज़ और अ़स्र की चार फ़र्ज़ और मग़रिब की तीन फ़र्ज़ और इ़शा की सात रक्अ़त या'नी चार फ़र्ज़ और तीन वित्र वाजिब) इन नमाज़ों को सिवाए तुलूअ़ व ग़ुरूब व ज़वाल के (कि इस वक़्त सज्दा व नमाज़ ना जाइज़ व गुनाह है) हर वक़्त अदा कर सकता है और इख़्तियार है कि पहले फ़ज्र की सब नमाज़ें अदा कर ले, फिर ज़ोहर, फिर अ़स्र, फिर मग़रिब, फिर इ़शा की या सब नमाज़ें साथ साथ अदा करता जाए और इन का ऐसा हिसाब लगाए कि तख़्मीने (या'नी अन्दाज़े) में बाक़ी न रह जाएं ज़ियादा हो जाएं तो ह़रज नहीं और वोह सब ब क़दरे ताक़त रफ़्ता रफ़्ता जल्द अदा कर ले, काहिली न करे। जब तक **फ़र्ज़** ज़िम्मे पर बाक़ी रहता है कोई **नफ़्ल** क़बूल नहीं किया जाता। निय्यत इन नमाज़ों की इस त़रह़ हो मसलन **सो बार की फ़ज्र क़ज़ा** है तो हर बार यूं कहे कि "सब से पहले जो फ़ज्र मुझ से क़ज़ा हुई" हर दफ़्आ़ येही कहे। या'नी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो सब से पहली है। इसी त़रह़ **ज़ोहर** वग़ैरा हर नमाज़ में निय्यत

करे। जिस पर बहुत सी नमाज़ें **क़ज़ा** हों उस के लिये सूरते तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी की सूरत) और जल्द अदा होने की येह है कि ख़ाली रक्अ़तों (या'नी ज़ोहर, अ़स्र व इ़शा की आख़िरी दो और मग़रिब के फ़र्ज़ की तीसरी रक्अ़त) में बजाए अल ह़म्द शरीफ़ के तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰہ कहे, अगर एक बार भी कह लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा नीज़ तस्बीह़ाते रुकूअ़ व सुजूद में सिर्फ़ एक एक बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم और سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़ लेना काफ़ी है। **तशह्हुद** के बा'द दोनों दुरूद शरीफ़ के बजाए اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ। **वित्रों** में बजाए दुआ़ए क़ुनूत के رَبِّ اغْفِرْلِیْ कहना काफ़ी है। तुलूए़ आफ़्ताब के बीस मिनट बा'द और ग़ुरूबे आफ़्ताब से बीस मिनट क़ब्ल (तक) नमाज़ अदा कर सकता है। इस से पहले या इस से बा'द (या'नी तुलूअ़ व ग़ुरूब के मुत्तसिल बीस बीस मिनटों में) ना जाइज़ है। हर ऐसा शख़्स जिस के ज़िम्मे नमाज़ें बाक़ी हैं छुप कर पढ़े कि गुनाह का ए'लान जाइज़ नहीं। (या'नी येह ज़ाहिर करना गुनाह है कि मुझ पर क़ज़ा नमाज़ें हैं या मैं क़ज़ा नमाज़ें पढ़ रहा हूं वग़ैरा)

(**इसी** सिल्सिले में सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया) अगर किसी शख़्स के ज़िम्मे **तीस** या **चालीस** साल की नमाज़ें हैं वाजिबुल अदा, उस ने अपने उन ज़रूरी कामों के इ़लावा जिन के बिग़ैर गुज़र नहीं कारोबार तर्क कर के पढ़ना शुरूअ़ किया और पक्का इरादा कर लिया कि कुल नमाज़ें अदा कर के (ही) आराम लूंगा और फ़र्ज़ कीजिये इसी ह़ालत में एक महीने या एक दिन ही के बा'द उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो **अल्लाह** पाक अपनी रह़मते कामिला से उस की सब नमाज़ें अदा कर देगा। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی : (या'नी **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ (پ۵، النساء:۱۰۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने घर से निकला **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया।

जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़ उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 712, 713)

ग़ाफ़िल दरज़ी (मदनी बहार)

एक इस्लामी भाई उन दिनों पंजाब में दरज़ी का काम करते थे, किरदार مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई ख़राब था, नमाज़ की बिल्कुल तौफ़ीक़ न थी, लड़ाई भिड़ाई तक़रीबन रोज़मर्रा का मा'मूल था, झूट, ग़ीबत, वा'दा ख़िलाफ़ी, गालम गलोच, चोरी, बद निगाही, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना, राह चलती लड़कियों से छेड़ख़ानी करना, मां बाप को सताना, अल ग़रज़ वोह कौन सी बुराई थी जो उन में न थी। उन की बद आ'मालियों से तंग आ कर घर वालों ने उन्हें बाबुल मदीना (कराची) भेज दिया। उन्हों ने बाबुल मदीना (कराची) के एक कारख़ाने में मुलाज़मत इख़्तियार कर ली, वहां लड़कियां भी काम करती थीं, इस लिये आ़दतें मज़ीद बिगड़ गईं। एक रोज़ उन को पता चला कि उन के मामूंज़ाद भाई दा'वते इस्लामी के **जामिअ़तुल मदीना** (गुलिस्ताने जौहर, बाबुल मदीना) में दर्से निज़ामी कर रहे हैं। वोह उन से मिलने पहुंचे तो वोह इन्तिहाई पुर तपाक त़रीक़े से उन से मिले, उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जो उन्हों ने क़बूल कर ली। जब इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हुए तो वहां किसी ने **मकतबतुल मदीना** के रसाइल "**बुड्ढा पुजारी**" और "**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**" उन्हें तोह़फ़े में दिये। क़ियाम गाह पर आ कर जब उन्हों ने वोह रिसाले पढ़े तो पहली बार येह एह़सास हुवा कि वोह अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर रहे हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने उसी वक़्त गुनाहों से **तौबा** की और पन्ज वक़्ता **बा जमाअ़त नमाज़** पढ़ने की निय्यत कर ली और हर जुमे'रात पाबन्दी के साथ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना) में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने लगे। सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर **ग़ौसे पाक** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मुरीद भी बन गए। मामूंज़ाद भाई की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की भी सआ़दत ह़ासिल हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की बरकत से वोह **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए और जामिअ़तुल मदीना में **दर्से निज़ामी** करने के लिये दाख़िला ले लिया।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1439 सि.हि.
27-04-2018

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1
﴾1﴿ एक कफ़न चोर की आपबीती (ह़िकायत)	1
आग की ज़न्जीरें	1
काला मुर्दा	2
क़ब्र में बाग़	3
﴾2﴿ पांच क़ब्रें (ह़िकायत)	3
शराबी का अन्जाम	4
ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा	4
आग की कीलें	4
आग की लपेट में	5
जवानी में तौबा का इन्आ़म	5
﴾3,4﴿ खोपड़ी में सीसा भरा हुवा था (ह़िकायत)	5
﴾5﴿ पुर असरार अन्धा (ह़िकायत)	6
क़ब्र में दफ़्न न हों तब भी जज़ा व सज़ा का सिल्सिला होता है	7
बरज़ख़ के मा'ना	7
अ़ज़ाबे क़ब्र का क़ुरआन से सुबूत	7
मुनाफ़िक़ीन की रुस्वाई	9
अ़ज़ाबे क़ब्र का ह़दीस से सुबूत	9
हम क्यूं परेशान हैं ?	10
नमाज़ की बरकतें	11
बे नमाज़ी का नाम दोज़ख़ के दरवाज़े पर	11
सर कुचलने की सज़ा	11
क़ब्र में आग के शो'ले (ह़िकायत)	12
होलनाक कूंवां	13
जहन्नम में जाने का हुक्म	13
बे नमाज़ी की सोह़बत से बचो !	13
क़ज़ा उ़म्री का त़रीक़ा	14
ग़ाफ़िल दरज़ी (मदनी बहार)	17

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن		عمدۃ القاری	دار الفکر بیروت
تفسیر طبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	نزہۃ القاری	فرید بک اسٹال مرکز الاولیا لاہور
روح المعانی	دار احیاء التراث العربی بیروت	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
روح البیان	دار احیاء التراث العربی بیروت	راحت القلوب	دہلی
تفسیرات احمدیہ	پشاور	تذکرۃ الواعظین	پشاور
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنّت برکات رضا الہند
الفردوس	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये **"मदनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

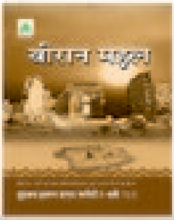

M.R.P.
₹ 14

0133087

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
देहली :- मक्तबतुल मदीना, 421, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net